आखर हिंदी पत्रिका ; e-ISSN-2583-0597 खंड 5/अंक 3/अगस्त 2025
Received: 19/04/2025; Accepted: 22/06/2025; Published: 28/08/2025

पुस्तक समीक्षा

भोंपू बाजा और उदास लड़की: समीक्षा के निकष पर

डॉ. अभय शंकर द्विवेदी
विभागाध्यक्ष- हिंदी
अवधूत भगवान राम पी. जी. कॉलेज
अनपरा, सोनभद्र, उत्तर प्रदेश

डॉ. अभय शंकर द्विवेदी, **भोंपू बाजा और उदास लड़की: समीक्षा के निकष पर**, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 5/अंक 3/अगस्त 2025**,(200-204) https://doi.org/10.5281/zenodo.17072811

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

मुक्ता की वैविध्यपूर्ण कहानी अनुभव की प्रत्यास्थता के सुदृढ़ आधार पर चलकर एक ऐसे परिवेश की रचना करती है जो कि भारत के मूल तत्व राष्ट्र और जीवन के साहचर्य के साथ उसकी सार्थकता को उपस्थित करता है।

आज के परिवेश में वर्तमान समय में हिंदी साहित्य के धरातल पर शोषितों, दलितों, उपेक्षितों, विकलांगों, पीड़ितों, मजदूरों, एवं स्त्रियों के प्रति आवाज देने से लोग कतराते रहते हैं तो वहीं मुक्ता अपने नौवें कहानी संग्रह 'भोंपू बजा और उदास लड़की' में 14 कहानियां – 'सुराख', 'अदृश्य इकतारा', 'फातमान रोड', 'छूटता हुआ घर', 'लॉकडाउन में एम्बुलेंस', 'खुली गठरी', 'कैक्टस भरी जिंदगी', 'पगली घंटी', 'कोने वाला कमरा', 'वह पल', 'हमे यहाँ से देखो', 'चन्दुआ सट्टी', 'कठघोड़वा', एवं 'भोंपू बाजा और उदास लड़की', के आधार पर समाज के जिन सच्चाइयों को वे सामने लाती हैं, उन्होंने उसे केवल विमर्शों तक सीमित नहीं रखा,

वरन अपनी कलम साधना के बल पर पाठकों समीक्षकों को चकित करने वाली उनकी कहानियों में आशावादी संवेदना लगातार बना रहता है।

मुक्ता की कहानियों की विशेषता यह है कि साधारण से दिखने वाले उनके पात्रों को केंद्रित कर लिखी गई ये कहानियाँ किसी एक व्यक्ति के जीवन यथार्थ पर आलोक पात करते- करते कब उसके समूचे समाज को बयान करने लगती हैं, यह इतना स्वाभाविक होता है कि पाठक वर्ग को समझने का मौका भी नहीं मिलता है। ' सुराख ' कहानी में सात साल की बच्ची के साथ हुए हैवानियत मौजूदा समाज की एक महत्वपूर्ण अंग स्त्री की बेबसी, अंतर्विरोध और द्वंद्व या क्राइसिस इस कहानी में नजर आती है। डॉ• निकिता भी इसी द्वंद्व में पड़ी सोचती नजर आती हैं। 'निकिता ने घड़ी देखी, रात के दो बज रहे थे।.....मुंह पर पानी के छिटे पड़े तो अपने होने का एहसास गहराया। चेहरे को गौर से आईने में देखा, आंखों के नीचे काले घेरे बढ़ने लगे थे। कमरे में लौटी तो बिस्तर पर जाने का मन न हुआ।'

मुक्ता की कहानियों में स्त्री जीवन के गहरे चित्र गुम्फित दिखते हैं, तथा पुरुष वर्चस्व का विरोध करती नजर आती हैं साथ ही स्त्री का स्त्री के प्रति संवेदना नजर आती है। ' अदृश्य इकतारा ' कहानी में इसी संवेदना, पुरुष वर्चस्व का विरोध करती नजर आती हैं। ' अदृश्य इकतारा ' कहानी में ' पूनम ' पुरुष वर्चस्व का विरोध करती हैं - "उस कमीनें की बुरी नजर मुझ पर थी..... उसकी शामत आई थी जो उसने मुझ पर हाथ डाला..... ऐसी पिटाई की है कि सात जनम याद रहेगा हरामखोर.....होटल का मालिक है तो क्या.....हर औरत उसकी रखैल बन जाएगी.....पूनम का चेहरा तमतमा उठा।"

"टीचिंग करना है.....तो यह गालियाँ नहीं चलेंगी.....इतनी दुबली कैसे हो गई.....कोई बीमारी तो नहीं हो गई?"

मुक्ता ऐसी कथाकार हैं जिन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से समाज को उसका वास्तविक स्वरूप दिखाती हैं। ' लॉकडाउन में एम्बुलेंस ' कहानी में समाज का एक दूसरे पर निर्भर होना, गरीबी, लाचारी नजर आती है, "बेचारी कामवालियाँ.....खाने की मोहताज हो जाएंगी....."

सुबह बाहर का दरवाजा पीटने की आवाज से नींद खुली। नंदिनी की बूढ़ी कामवाली ने दरवाजा खुलते ही गुहार लगाई " हम सब जाने लीं - ताला मारकर अन्दर बैठल हंइ- हमरे पेट पर लात मारीहैं- हमहूं ईहैं उनके दरवाजे पर धरना देव - बतावे कहां हई....."

बुढ़िया नंदिनी जी के दरवाजे पर जाकर बैठ गई।.....कल फिर आऊब – देखब कईसे दरवाजा न खोलीहैं- हमार दस बरस के काम अइसे ही छूट जाई-।"

मुक्ता का कथा-साहित्य नारी विमर्श के अनेकों महत्वपूर्ण सवालों से साक्षात्कार करता है। समाज की जिन-जिन पक्षों को वे सामने लाती हैं, उन्होंने उसे केवल विमर्शों तक सीमित नहीं रखा; बल्कि वर्तमान परिवेश में जीवन जी रहे दलितों, शोषितों, एवं स्त्रियों को भी अपनी कहानियों का वर्ण्य- विषय बनाया है।

भारतीय समाज में स्त्रियों को लाचार एवं कमजोर समझा जाता रहा है, तो वहीं मुक्ता ने "खुली गठरी" कहानी के माध्यम से वृद्ध स्त्री को समाज से लड़ते हुए दिखाया है।

"काल बेल बजी। अर्चना समझ गई, दूधवाला आया होगा। भगौना हाथ में लेकर दूध लेने दरवाजे पर पहुंची तो सामने वाली पड़ोसन ने आवाज दी।"

"अखबार देखा.....आज तो बुढ़िया की तस्वीर छपी है....."

"अच्छा.....किस बुढ़िया की.....अभी समय नहीं मिला अखबार पढ़ने का....."

"उसी बुढ़िया की.....फिर बवाल किया है उसने....."

"खबर थी,.....झुग्गी उजाड़ने पहुंची पुलिस को एक वृद्धा ने घंटों छकाया। वृद्धा के रौद्र रूप और लोगो के हस्तक्षेप के कारण पुलिस दल को कार्य स्थगित कर लौटना पड़ा। नीचे पुलिस दल से घिरी बुढ़िया की तस्वीर छपी थी।"

वर्तमान परिवेश में भारतीय समाज के चरित्र में आज भी स्त्री समाज बहिष्कृत है, उनके घर कि निर्धनता के कारण लिख- पढ़ नहीं पाती, आये दिन घटने वाली असामाजिक घटनाओं तथा नर वेश में छद्म आवरण में ढके दरिंदे भेड़ियों के उत्पीड़न के कारण लड़कियों में एक भय उत्पन्न करता है। मुक्ता ने "भोंपू बाजा और उदास लड़की" कहानी में नरवेशी दरिंदा से कमली को लड़ते तथा जूझती हुई स्वाभिमानी नारी को प्रस्तुत कर 'सरदार' के गाल पर तमाचा ही नहीं जड़ा बल्कि समूचे समाज में स्त्री को मजबूती देने का प्रयास की। "बच्चा

सरदार ने लिफाफा जमीन पर पटक सुग्गी को दबोच लिया। सुग्गी की चीख बाहर आते ही बच्चा.....उसकी उगती गोलाईयों पर हाथ फेरने लगा।"

चारों दिशाओं में कान रखने वाली कमली तक चीख की आवाज पहुंच चुकी थी। चौकन्नी हो वह भीतर दौड़ी। सामने का दृश्य देख वह काठ हो गई। अगले ही क्षण कमली ने बच्चा सरदार के गाल पर जोर का तमाचा जड़ दिया।"

एक समय था कि कथाकार नगरों एवं गाँवो के परिवेश को दृष्टिगत रखते हुए कहानियों को लिख रहे थे, जिसमें कहीं नारियों के उत्पीडन, शोषण एवं गरिबी आदि पर कहानियां लिखे तो कुछ कहानियों में कहानीकारों ने पुरुष वर्चस्व को उजागर किया तो कही कहानीकारों ने समाज में फैले कुरीतियों एवं अंधविश्वासों पर मजदूरों, किसानों पर कहानियाँ लिखे मुक्ता ने इनसे इतर ऐसी कहानी रच डाली कि जो नपुंसकता पर आधारित तो था ही उसमें प्रेम त्रिकोण भी था साथ ही स्त्री मनव्यथा तथा स्त्री का प्रतिशोध भी था। एक तरफ स्त्री का प्रेम तो दूसरी तरफ स्त्री का प्रतिशोध। "कैक्टस भरी जिन्दगी" कहानी में मुक्ता ने इन सभी पक्षों को उजागर किया है जहाँ 'सोनम' ने प्रोफेसर सेन से प्रेम के खातिर अपनी उम्र और समाज का परवाह न करते हुए अपनी खुशियों को तार-तार करते हुए नपुंसक प्रोफेसर सेन से शादी कर प्रेम को एक नई ऊंचाई प्रदान की " मैने प्रोफेसर सेन से विवाह कर लिया । इस बीच बहुत दिनों से तुम मिली नहीं मिली बहुत कुछ कहना है। श्रीमती सेन ने तलाक ले लिया है। कारण तो मुझे वैधानिक रूप से सम्बंध विच्छेद हो जाने के बाद ही पता चला कि प्रोफेसर सेन नपुंसक है। इस अवस्था में ही उन्होंने श्रीमती सेन से विवाह किया था। यह विवाह प्रोफेसर सेन को अपने घरवालों के बहुत दबाव डालने के कारण ही करना पड़ा था।..... श्रीमती सेन मुझसे कहा- "सोनम, मैंने प्रतिशोध ले लिया है, अभी तक की जिन्दगी मैंने विद्रोह की आग में जलते हुए बिताई है। प्रोफेसर सेन से मैं न जुड़ ही सकी थी न ही अलग हो पा रही थी। तुम्हारे आने से मेरी मुश्किल आसान हो गई।"

मुक्ता उन कहानिकारों की तरह नहीं है जो कि किसी एक पक्ष में बंधकर कहानी लिखे। वे एक ऐसी कहानीकार है जो कि सारी बंदिशों को तोड़ते हुए समाज के अलग-अलग पक्षों को सामने लाती है 'हमें यहाँ से देखों' कहानी में मुक्ता ने ऐसी सच्चाई को उजागर किया है जो कि आज समाज में बहुत तेजी से प्रवाहमान हो रहा है, स्त्री का स्त्री से सम्बन्ध यानी कि 'गे' के प्रति रुझान ऐसे प्रश्नों को इस कहानी में सामने लाती है, नीलिमा और झरीना के दोनों स्त्री होते हुए भी 'गे' की तरह आपस में संबंध बनाती है ऐसा कथन स्वयं सिद्धार्थ से नीलिमा व्यक्त करती है। "हर तरह से सिद्धार्थ हम दोनों रिश्ते में है। "नीलिमा का स्वर भावुक हो उठा । आंखे चमकने लगी।"

आधुनिक महिला कथाकारों में मुक्ता की कहानियाँ सभी वर्गों की नारियों को लेकर जन-साधारण से संवेदनात्मक सरोकार तो करता ही है बल्कि अनुभव की विविधता के साथ ही कथ्य को प्रस्तुत करने के लिए शिल्पगत चतुराई और भाषा पर भी अद्‌भुत अधिकार है। मन्नू भंडारी, कमल कुमार, ममता कालिया जैसी कहानीकारों के कहानियों के श्रेणी में मुक्ता की कहानियां भी इसी श्रेणी में हैं। मुक्ता का रचना संसार विशद तो है ही, बहुरंगी और बहु आयामी भी है। इनके कहानियों के संदर्भ में यह कह सकते है कि उनके चरित्र व्यवहारिक और संवेदनात्मक स्तर पर कहानी कसौटी पर खरी उतरती है।

****